NEWSLETTER

GOLD : 50082
SILVER : 55525
CRUD OIL : 7855

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

16/07/2022

किसान की आवाज

मेरा परिवार पिछले लंबे समय से कपास की खेती से जुड़ा हुआ है। पहले हम 50 प्रतिशत मिर्च और 50 प्रतिशत कपास की बुआई करते थे। लेकिन मिर्च की फसल में कीड़ा लग जाने और इसकी लागत भी अधिक आने की वजह से अब हम सिर्फ कपास की ही खेती करते है। वर्तमान में हमारे पूरे एरिया यानी पुनासा तहसील बेल्ट में 80 प्रतिशत कॉटन और महज 20 प्रतिशत मिर्च की बुआई हो रही है। हमारी अपनी जमीन 7 से 8 बीघा है लेकिन हमने इस साल लगभग 40 से 45 एकड़ में कपास की बुआई की है। यदि मौसम अच्छा होता है तो हमारे यहां 1 एकड़ में 7 से 8 क्विंटल की पैदावार हो जाती है लेकिन यदि मौसम अनुकुल ना हो तो बमुश्किल 2 से 3 एकड़ की फसल हो पाती है। यह जानकारी दी मध्यप्रदेश क सनावद स्टेशन के सुलगांव के कपास किसान यशवंत गजानंद मालवीय गुर्जर ने। अपने क्षेत्र की समस्या के बारे में उन्होंने बताया कि नर्मदा मैया की कृपा से हमारे बेल्ट में पानी पर्याप्त मात्रा में है। यहां किसानों की केवल एक समस्या है और वह है फसल की सही दवाई की उपलब्धता का ना होना। सरकार और दुकानदार यदि हमें सही समय पर बिना मिलावट के फर्टिलाइजर और अन्य दवाई उपलब्ध करा दे तो हमारी बहुत बड़ी परेशानी हल हो जाएंगी। इनदिनों मार्केट में फर्टिलाइजर में बहुत मिलावट की जा रही है नतीजा यह होता है कि फसल को जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिलता और कपास की क्वालिटी और क्वांटिटी पर इसका बुरा असर होता है।

सुनहरा अवसर

इंडस्ट्री से जुड़े **40** हजार से ज्यादा लोगों तक पहुंचाए अपने बिजनेस की हर जानकारी हमारे माध्यम से पाएं अपने बिजनेस को बढ़ाने का सुनहरा अवसर

जानकारी के लिए संपर्क करें-
9111977771

एक्सपायर्ड हो चुका है इंडिया का कॉटन सीड, लगातार घट रही उसकी इम्यूनिटी

पिछले 25 सालों से इंडस्ट्री में कॉटन ब्रोकर की भूमिका निभा रहे राकेश सेठीजी से खास बातचीत

फसल चाहे कोई भी हो उसके बीज की एक उम्र होती है। सामान्यतः कॉटन सीड 10 सालों के बाद बदल दिया जाना चाहिए। भारत में पिछली बार 2001-2003 में बीटी कॉटन सीड लॉन्च किया गया था उसके बाद से अब तक नया सीड नहीं आया है। इसके मुताबिक सोचे तो पिछले 9 सालों से हम एक एक्सपायर्ड सीड को बो रहे है। नतीजतन हमें फसल की क्वालिटी और क्वांटिटी दोनों से ही समझौता करना पड़ रहा है। इसी कारण कपास की पौधे की इम्पयुनिटी भी लगातार कमजोर होती जा रही है। 2017 के बाद से पूरे इंडिया में कपास की फसल वाइट फ़्लाई , फंगस या अन्य रोग से ग्रसित हो रही है। इस कारण क्वालिटी में लगभग 10 प्रतिशत और क्वांटिटी में लगभग 10-20 प्रतिशत की कमी हो रही है। वर्तमान कॉटन परिदृश्य को दर्शाती यह जानकारी मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र के जाने-माने कॉटन ब्रोकर राकेश सेठी जी ने दी।

बहुत उतार-चढ़ाव वाली इंडस्ट्री

उन्होंने कहा कि कॉटन इंडस्ट्री की तेज़ी - मंदी विभिन्न फैक्टर्स जैसे कवालिटी, क्वांटिटी, गवर्नमेंट पॉलिसीज, करंसी रेट और इंटरेशनल मार्केट आदि पर निर्भर करती है। चूंकि फैक्टर्स बहुत ज्यादा है इसलिए मार्केट में अप-डाउन होना लाजमी है। इस वर्ष रॉ मटेरियल की कमी थी और डिमांड ज्यादा थी इसकी वजह से मार्केट में स्थिरता नहीं आ पा रही थी। किंतु कोरोना की वजह से अंतराष्ट्रीय बाज़ार में कपड़े की माँग कमजोर हो गई है उसी वजह से पिछले कुछ माह से मिलो को बहुत ही ज़्यदा डिस्पैरिटी का सामना करना पड़ रहा है इसलिए वर्तमान में मिलों ने अपने कन्सम्प्शन में कमी कर दी उसी वजह से मार्केट में रुई की डिमांड कम हो गई नतीजा मार्केट २० % डाउन हों गया। हाल ही में रिपोर्ट आई है कि चाइना ने अपना इंपोर्ट का कोटा खोला है, आने वाले समय में इसका असर भी भारतीय कॉटन बाजार पर पढ़ेगा।

25 वर्षों में रुई का उत्पादन 5 गुना बड़ा

राकेशजी ने बताया कि , 25 वर्षों में रुई का उत्पादन 5 गुना बड़ा है जबकि खपत दिनो दिन बड़ती ही जा रही है। 30-35 साल पहले भारत में कॉटन क्रॉप महज 60 लाख हुआ करती थी जो आज बढ़कर 3 करोड़ 50 लाख हो गई है। 30 सालों में हमारा प्रोडक्शन 6 गुना बढ़ा है और कंजम्प्शन में कई गुना की बढ़ोतरी आई है। इससे स्पष्ट है कि समय के साथ इंडस्ट्री की ग्रोथ हुई है। कॉम्पीटिशन बढ़ा है, बहुत से पॉजीटिव बदलाव आए है। चूंकि ये बिजनेस पूरी तरह से अनुमानित आंकड़ों पर चलता है इसलिए यहां उतार-चढ़ाव बहुत ज्यादा है।

अपने पिताजी श्री **निर्मल सेठी जी** के साथ **राकेश सेठी**

युवाओं को सुझाव

उनके पिताजी (जो कि इस बाज़ार में ५० वर्षों के अनुभवी है) कहा करते है कि कॉटन और हीरे की परख एकसी होती है। यह सही है कि मशीनों ने इस काम को आसान कर दिया है लेकिन रुई की पहचान होनी चाहिए। सर्विस सेक्टर में ऑप्शन भी बहुत है और पैकेज भी अच्छा है। लेकिन खुद की इंडस्टी डालना चाहते है तो रिस्क को पहले कैल्कुलेट कर लेना चाहिए और केवल लोकल मार्केट पर निर्भर नहीं रहना चाहिए आज के दौर के हिसाब से अंतरष्ट्रिय बाज़ार की भी पूरी जानकारी होनी चाहिए ।

NEWSLETTER

NORTH : Light Rain
CENTRAL : Light Rain
SOUTH : Heavy Rain
(WEATHER REPORT)

Download Our App "SIS CONNECT" For Daily Updates. CLICK HERE

16/07/2022

5 महीनों में 31.59 प्रतिशत बढ़ा अमेरिका का टेक्सटाइल एंड अपेरल इम्पोर्ट

सप्लायर में चीन सबसे आगे

यूएस में टेक्सटाइल और अपेरल का इम्पोर्ट तेजी से बढ़ता जा रहा है। पिछले 5 महीने यानी जनवरी से मई के बीच ही इसमें 31.59 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। 2021 में मई तक यह 41.688 अरब डॉलर का कारोबार था जबकि 2022 मई में यह बढ़कर 54.859 अरब डॉलर का हो गया है। इम्पोर्ट की इस बढ़ोतरी में सप्लायर की सबसे बड़ी हिस्सेदारी में 27.01 प्रतिशत के साथ चीन सबसे आगे है। इसके बाद 13.74 प्रतिशत के साथ वियतनाम दूसरे पायदान पर है।

2020 में विपरित थी स्थिति

यूएस डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स द्वारा जारी शिपर्स रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी से मई 2022 के बीच गैर परिधान आयात 13.920 बिलियन डॉलर का था जबकि परिधान आयात की कुल कीमत 40.939 बिलियन डॉलर थी। जानकारी के लिए बता दे कि 2020 में कोविड की वजह से अमेरिका के टेक्सटाइल और अपेरल के आयात में तेजी से कमी आई थी।

तुर्की से आयात में आई कमी

सेग्मेंट वाइज अमेरिका के शीर्ष 10 आपूर्तिकर्ता में इंडोनेशिया और बंग्लादेश में साल दर साल 59.75 और 59.06 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जबकि पाकिस्तान से आयात 56.49 और भारत से 55.06 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। इसके अतिरिक्त होन्डुरस,कंबोडिया, वियतनाम, इटली से भी आयात में इजाफा हुआ है। वहीं दूसरी ओर तुर्की से आयात में 9.38 प्रतिशत की गिरावट आई है।

जनिए टेक्सटाइल निवेशकों के लिए कैसा रहा ये सप्ताह

11 जुलाई से 16 जुलाई के मध्य प्रमुख टेक्सटाइल कंपनीज की शेयर रिपोर्ट पर एक नजर

पिछले कुछ महीनों से शेयर मार्केट में गिरावट का माहौल है जो इस सप्ताह भी जारी रहा। इस गिरावट का असर टेक्स्टाइल कंपनीज के निवेशकों पर भी पड़ा। पिछले सप्ताह पर नजर करें तो शेयर मार्केट में सभीप्रमुख टेक्सटाइल कंपनी के शेयर प्राइज में खासी कमी आई है। आइए जानते है बीएससी के मंच पर क्या रही इन कंपनी के शेयर्स की रिपोर्ट-

कंपनी	करंट प्राइस	हाई प्राइस	लोएस्ट प्राइस	हलचल
वर्धमान टेक्सटाइल लिमिटेड	267.05	286	262.1	-4.62%
अरविंद लिमिटेड	86.55	90.8	85.85	-3.03%
वेलसपन इंडिया	69.5	71.7	68.7	-0.71%
नितिन स्पिनर्स	199.4	207.95	199	-2.87%
रेमण्ड	961.5	994	923	-0.83%

जनिए टेक्सटाइल निवेशकों के लिए कैसा रहा ये सप्ताह

कॉटन के भाव पिछले सप्ताह लगातार गिरे है। ऑल इंडिया फिजिकल मार्केट पर नजर करें तो 11 से 16 जुलाई के बीच पंजाब, हरियाणा, अपर राजस्थान, गुजरात औरमध्यप्रदेश राज्यों में कॉटन भाव में गिरावट दर्ज की गई है। जबकि महाराष्ट्र में सप्ताह की शुरूआत में कॉटन के जो भाव थे वहीं सप्ताहअंत पर भी रहें। सबसे कम गिरावट अपर राजस्थान में 250 रूपए की जबकि सबसे अधिक गिरावट 1000 रूपए की मध्यप्रदेश में दर्ज की गई। ज्ञात हो फिजिकल मार्केट के अलावा सभी एक्सचेंज मार्केट में भी इस सप्ताह कॉटन भाव में गिरावट हुई है।

WEEKLY PHYSICAL COTTON MARKET

STATE	STAPLE LENGTH	11.07.22	16.07.22	CHANGE
NORTH ZONE				
PUNJAB	28.5	9,150	8,800	-350
HARYANA	27.5/28	8,800	8,200	-600
UPER RAJASTHAN	28	9,150	8,900	-250
CENTRAL ZONE				
GUJARAT	29 (75 RD)	87,500	87,000	-500
MADHYA PRADESH	29 (75 RD)	86,000	85,000	-1000
MAHARASHTRA	29 (75 RD VIDHARBH)	88,000	88,000	0

NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy